राति-दिन

रातित-दिन

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

RAIT-DIN (राति-दिन)
Anthology of Maithili Poems by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-40-8
दाम: 150/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रमः

मनमनियाँ

मैथिली कथा-गोष्ठीक आयोजनमे आठ दिन बँचल छल। जनकपुरक गोष्ठी, तँए जेबाक विशेष जिज्ञासा। आने बेकती जकाँ गोष्ठीमे नव कथाक पाठ करै छी। कथा पाठसँ मनमे ताजगियो बनल रहैए। गोष्ठीपर नजैर पड़िते बामा हाथक ओंगरीपर दिन गनलौं। आठमे दिन गोष्ठी छी, कथा कहाँ भेल? पनरह-बीस दिन पहिने जे लिखने छेलौं से तँ 'विदेह' ई-पत्रिकामे आबि चुकल अछि। ओह! अनेरे कथा पठेलौं...। केना नै पठबितौं? अनुभवो तँ किछु छिऐ। कहलो गेल छै-

"जेतए ने जाए रवि, तेतए जाए कवि मुदा जेतए ने जाए कवि तेतए जाए अनुभवी।"

भेलो तहिना रहए। एकटा सम्पादक गिड़गिड़ाएल रहैथ जे वस्तुक अभावमे पत्रिकाक ऐगला अंक बिलैम सकत। मुदा पठौलापर दू सालक बाद छपलैन। खाएर जे होउ। आठ दिन कथा लिखैले समय जँ कम नै भेल तँ बेसियो नहियेँ भेल। प्रश्न लिखनिहारपर निर्भर करैत अछि। तँए कोनो ओझरी नै बुझि पड़ल। नजैर जनकपुर दिस बढ़ल।

एक दिस नव प्रजातंत्र देशक गोष्ठीमे भाग लेब, जे हजारो बर्खसँ राजतंत्री बेवस्थाक जिनगी पाबि घँसाएल सिक्का जकाँ भऽ गेल अछि। जेकर चिन-पहचिन खिया कऽ एकबट्ट भऽ गेल अछि। खाली अकार मात्र शेष बँचल छइ। बजारमे एकरा के पुछत? जेहने मन हल्लुक छल तेहने चिड़चिड़ी लगल टिक जकाँ ओझरा गेल। एक दिस ओझरी छोड़बी

तँ दोसर दिस लगि जाए। मनकेँ बहटाबौ चाही से बहटबे ने करए। ओझरियो तेहेन जे जेते छोड़बी तेते बेसियाएले जाए।

जहिना टीकक ओझरी छोड़बैमे दुनू डेन उठौने-उठौने भरा कऽ दुखाए लगैत तहिना मनो असोथकित भऽ गेल। आँखिक पुतली तँ देखि पड़ए मुदा इजोतक केतौ पता नहि। तहिना देहो-हाथ पनिमरू भऽ गेल। ने अक चलए आ ने बक! अकैछ कऽ रेडियो खोललौं, संयोगो नीक बैसल। दरभंगासँ गीत चलैत रहइ- "राही चल ओ राही चल... ।"

उपरोक्त गीत सम्पन्न होइते- "जीवन चलने का नाम, चलता रह सुबहो शाम... ।"क टुनिंग बाजए लगल। जहिना अनभुआर ठाम दिशांष छुटिते बदलल-बदलल दिशा बुझि पड़ैत तहिना भेल। जाड़क मासमे जहिना भिनसुरका रौद पीअरगर लगैत तहिना गीत पीअरगर लगल। मुदा एकटा विचित्र दशा सेहो उपस्थित भेल। ओ ई जे कनी-कनी कऽ सुतैले आँखियो झलफल करए लगल मुदा तखने मनमे एक नव बात आएल। मन उनैट कऽ अपनापर पड़ल। गीत मनमे घुरियाइते छल। एक तँ जेते मातृभूमि-मिथिलाक जे चित्र मनमे बनल अछि ओकर साकार रूप देखैमे जेतेक श्रमक खगता अछि तेकर पाँचो प्रतिशत सेवा नै कऽ सकलौं हेन, तखन? मुदा जेहने नम्हर प्रश्न तेहने बेसी टोंटी हैदराबादी ओल जकाँ तँ नहि, अपितु अरुआ-टौकना जकाँ एकसिरा..! मुदा विचारमे एकटा नव बात जरूर जोड़ाएल। ओ ई जे असगरमे केते कएल जा सकैए? गंगा धार जकाँ चौड़ाइ तँ कनी कमो बुझि पड़ए मुदा लम्बाइक ओर-छोर देखबे ने करिऐ। मुदा पाछू घुमि देखी तैयो ओहिना आ आगू दिस देखी तैयो ओहिना! केतौ-सँ-केतौ पानिक धारा धड़धड़ाइत जा रहल अछि। अखन धरि जे किछु लिखलौं, ओ गद्य लिखलौं पद्य तँ सोलहन्नी छुटले अछि। मुदा जहिना चारि बाटक चौबट्टी वा तीन बाटक तीनबट्टी वा दू बाटक दुबट्टीक बीचमे चौड़गर जमीन रहैत तहिना गद्य-पद्यक बीच चबुतरा बनबै जोकर खाली जगह भेटल। अराम करैक विचार मनमे उठए लगल आकि

तइसँ पहिने मनमे उठि गेल जे जखन जिनगी 'चलै'क नाओं छी तखन अपनो तँ थुसकुनियेँ मारि अराम करए चाहै छी! तखन साँझ-भिनसर चलब केना भेल? प्रभातीसँ प्रभातक सुआगत होइए। संध्यासँ साँझक। सोहर-समदौन जकाँ ओर-छोर कहाँ अछि..?

मन घुरियाएल। जहिना कोनो गाममे तेहरा-चौहरा कऽ डुम्मा बाढ़ि आबि खेत-पथारसँ लऽ कऽ घर-घराड़ी तककेँ डुमा दैत तहिना भेल। मनक सभ किछु हेरा गेल। अचेत भऽ गेलौं। चेत होइते जनकपुरक गोष्ठी पुन: मनमे उठल। मुदा कथा-गोष्ठी लगले हेरा गेल। जनकपुरसँ मन जानकीक वनबास दिस बढ़ि गेल। जे राम, जानकीक खोज गाछ-बिरीछसँ पुछि-पुछि करैत रहैथ तिनका मनमे जानकीक प्रति अविश्वास एकटा नान्हिटा बात सुनि भेलैन! की विश्वास-अविश्वासक गाछ एत्ते छोट छै जे एकटा पत्ता खसने गाछक रूप बदैल जाएत? मुदा गाछसँ आगू बढ़ि मन गाछीक बोन दिस बढ़ल। चौदह बर्ख राम बोनमे रहला। जइ बोनमे केतेको ऋृषि-मुनिक आश्रम पहिनहिसँ छेलैन। ओ बोन केना भेल? जँ भेल तँ हुनका सभकेँ बोनबास किए भेल छेलैन? मन ओझरा गेल। मुदा लगले मनमे उठल-

"पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है!"

एक संकल्पक संग मन आगू बढ़ल। पद्य सेहो लिखैक विचार जगल। मुदा गद्ये जकाँ तँ पद्योक संसार छै। पोखरिक अथाह पानिमे डुमए लगलौं। धरतीपर पएर रोपए चाही तँ साँस फुलए लगए आ हाथ चलबैत ऊपर होइ तँ सोल्होअना पानियेँमे चलि आबी। धरती छुटि जाए! विचित्र स्थिति बनि गेल। मनक मनोरथ मनेमे घुरियाए लगल। आब तँ बीस-पच्चीस बर्खक उमेरो नहियेँ अछि जे बिआह, दुरागमन आकि कनियाँ-बरक गप-सप्प लिखब। साठिसँ ऊपर उमेरमे पहुँच गेल छी। सीँग कटाएब सोहो नीक नै बुझि पड़ए। मुदा सीँगो कटा तँ पर्ड़ूक जेरमे

मिझ्झर भेनिहारक तँ कमी नहि! मन आरो ओझरा गेल। आगू तकलौं तँ बुढ़-बुढ़ानुसपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते खौंझ उठि गेल। केना नै उठैत? साठि सालक जिनगीक अनुभव केनिहार सभ तँ अपने मकड़जालमे ओझरा जाइ छैथ। मुदा तेकर दोख किनका सिर मढ़ल जाए? किछु फुरबे ने करए। आगू-पाछू करैत मन घुमि दूधमुहाँ बच्चा सभ दिस बढ़ल। ठमकलौं। मुदा हाटक बरद जकाँ मुँह-कानक रंग-रूप देखि जोड़ा लगबए चाहलौं तँ ने दूटाक मुँहक जोड़ा लगए आ ने चालि-ढालिक। फेर लजैनी उपजल राड़ीक खरहोरि जकाँ मन ओझरा गेल। पलाएल खढ़ रहने जमीन नजैरपर पड़बे ने करए। तेना भऽ कऽ झँपाएल! अन्दाजसँ डेग बढ़बौ चाही तँ चुप-चुप लजैनीक काँट गड़ए। आब की करब?

रस्ता चलल राही जकाँ बिनु चलनहि देह-पएर दुखाए लगल। एक्के उमेरक दूटा बच्चामे एतेक अन्तर केना आबि गेल? एक दिस पाँचे बर्खक बच्चा दस बर्खबलाक कान कटैए तँ दोसर दिस तीनियोँ बर्खक बच्चासँ पछुआएल रहैए। तहूमे शरीरेक अन्तर नहि, बुधियोक दूरी! एहनो तँ होइते अछि जे पच्चीसो-तीस बर्खबला दस-बारह बर्खक बच्चोसँ पछुआएल अछि!

प्रश्न उठैत जे बच्चा केकरा कहल जाए? शरीरक काँतिये आकि बुधिक काँतिये? तत्-मत् करैत बोधेक अधारपर बच्चाक सीमा निर्धारित करए चाहलौं। मुदा कोनो भारी मोटा उठबैमे तँ सीमा ढहि जाइत अछि। हारि-थाकि मन एतए पहुँच गेल- जखन जे विचार हएत तखन से लिखब। जइसँ कविता संग्रह एकबट्ट नै वरण् इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगा भऽ गेल अछि। सतरंगा होइक दोसर कारण ईहो भेल जे अखन धरि कविताक मर्मकेँ नीक जकाँ नै पाबि सकलौं अछि। कखनो तुकबन्दी तँ कखनो खटमिट्ठी तँ कखनो रका-टोकीकेँ बुझे छी। जखन जेहेन मन खनहन रहल तखन से बुझै छी। अपन बात एतबे कहब।

सतरंगी वैभवसँ सज्जित पोथी समक्ष अछि। अपन साहित्यिक जीवनक श्रीगणेश करबामे कवि वा कलाकार केतए-सँ आ केना प्रेरणा पबैत, 'मंद कवियश: प्रार्थी'क कार्य शुरु करैत से कहब कठिन। तेकरो कारण अछि। कियो पचपन-साठि बर्खक अवस्थामे साहित्य-संसारसँ संयास लइ छैथ, तैठाम अपने शुरुए केलौं। तँए विचारमे किछु अन्तर हएब सोभाविके अछि। कियो जुआनीक रसमे डुमि कविता लिखलैन, तैठाम अपनाकेँ फीका बुझै छी। मुदा ईहो तँ बात अछि जे कियो मृत्युक चित्रण करैमे अपने मरि कऽ अनुभव नै करैत। भरिसक तखन प्रेरणा-स्रोत भीतर नै भऽ अधिकतर बाहरे रहैत अछि। अपना समैयक कविक रचनासँ कोनो-ने-कोनो रूपे प्रभावित भऽ उदीयमान कवि अपन लेखनीक परीक्षण करैत। जहिना एक दीपसँ दोसरमे ज्योति अबैत तहिना आन-आन कविक कृति हृदैक सौन्दर्यसँ स्पर्श करा शिखा जरबैत। ओइ ज्योतिमे अपन भीतर-बाहरक रूचिक अनुरूप ओइमे संस्कार दऽ अपनापनक छाप लगबैत...।

अपन कवितासँ स्पष्ट होइत जे किशोर प्राण-मूक कविकेँ बाहर आनक सर्वाधिक श्रेय अपन जन्मभूमिक ओइ नैसर्गिक सौन्दर्यकेँ अछि, जेकरा कोरामे पलि नम्हर भेलौं। ओना अपना भीतर ओहन संस्कार अबस्स रहल अछि जे कविताक प्रेरणा देलक।

कवि आ लेखक, अपना युगसँ प्रभावितो होइत आ युगकेँ प्रभावितो करैत। ओना किछु रचना छोड़ि मैथिली कविताक सर्वाधिक आग्रह रूप-विधान आ शिल्पक प्रति रहल अछि। भावपक्ष मूलत: वैयक्तिक बनल अछि। भावनाक उदात्तता, सार्वजनिक उपयोगिता, अर्थ-गाम्भीर्य दिस अधिक आकृष्ट नहि अछि। अपन चारू दिसक परिस्थितिक अन्हार मानसिक कुहेसमे किछु टटोलैत मात्र अछि। सत्यसँ अधिक आस्था ओकर क्षणकेँ बदलैत यथार्थेमे अछि। एहेन भाव वा वस्तु-सत्य जेकर मानव जीवनक कल्याण लेल भऽ सकए, नइ अछि। ओ प्रतीक

बिम्ब, शैली आरो विधाक जन्म दऽ रहल अछि जे अतिशय वैयक्तिक रूचिक तथ्य-शून्य तथा आत्म-मुग्ध कविता छी। जखन कि आइ सर्वदेशीय संस्कृति, मानवता आदिक प्रश्न साहित्यक सम्मुख उपस्थित अछि।

अपन कवितामे मध्य-युगक आध्यात्मिक आ आदर्शवादक चेतनाकेँ नवीन लोक-चेतनाक स्वरूप देबाक प्रयत्न कऽ ओकर निष्क्रियताकेँ सक्रिय बनबैक प्रयासक संग ओकर वैयक्तिकताकेँ उन्नत समाजिकतामे परिणत करैक चेष्टा कएल अछि। ‘हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता’क संग विराम दइ छी।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

2013

बेरमा, तमुरिया, मधुबनी (बिहार)

संघर्ष

पएर पञ्ज पबिते पबैत
पैजन चाह करैए।
तहिना चाहि चेत कुण्ड
धारण जिनगी करैए।
काया-माया संग सदए
मिलि संग जिनगी पबैए
शिव सदृश सीमा सिरैज
राति-दिनक रूप धड़ैए।
बीच कृष्ण घनश्याम जहिना
महाभारत द्वापर रचैए।
संग मिलि तहिना सदए
विपरीत दिशा धड़ैए।
एक कौरब एक पाण्डव बनि
शरीर-शरीरी खेल करैए।
गीता गाबि सम्हारि शास्त्र
लीला जिनगी रचैए।

भरल हाथ एक, एक निहत्ता
उतैर भूमि वंश कुरुक्षेत्र।
हारि-जीत संगे सिरैज
संग मिलि रक्षो करैए।

निर्जीव दूध निकैल सजीव
आगि चढ़ि आरो निर्जीव बनैए।
कहि दही मटकुर सजि
दूध-दही कहबैए।
होइते ठाढ़ बनिते दही
प्रेमी चाह करैए।

पाबि प्रेमी प्रेम पकैड़
पपीहा नाच करैए।
पकैड़ संग संगी बना
मर्त सर्ग संग सजैए।
कहि-कहि जीवन-मरण
साँझ-भोर डहकैए।

उदय-अस्त नचिते-नचैत
भू-भूलोक भुलबैए।
बरैस बादल गरैज-गरैज
मन मगन करबैए।
आशा-आस सटिते सटैत
आँखि धार धारण करैए।
पकैड़ प्रेम पड़ि पएर
राहीक राह रचैए।
सींच जल शीतल बना मन
चलए संग कहैए।

बिनु सिरक राही रचि
भवसागर टपए कहैए।

अजस्र धार भवसार सजल छै।
नाओं एक खाली पड़ल छै।
डेग-डेगी डेगते डगैत
डगमग-डगमग पएर करै छै।
डोर-डोर पकैड़ डारि
बनि-बनि सुत घींचए लगै छै।
बनल सुत राही जेना
तहिना सगरो पसरल छै।
पिछैड़-पिछैड़ दीन-हीन
रूप सजि सटै छै।
कियो सटि झूलैत दहिना
बामा कियो सटै छै।
कियो सटै कोनो कोनचर
कियो बीचे-बीच उड़ै छै।

सदए-सँ होइते एलैए
होइते रहतै आगूओ दिन।
अन्हार-इजोत बीच सदए
दिन-रातिक बीच दुर्दिन
दिन-दुर्दिन बनिते बनैत
अकास बीच उड़ैए।
सुदिन-कुदिनक सीमा पकैड़

निहाड़ि नजैर नचबैए।
डिम सतमी भगवती जेना
सिरजए सदैत ज्योति शक्तिक।
राति-महाराति बैस बीच
दर्शन दिशा दैत भक्तिक।
शक्त-शक्तिक संग सदए
जिनगीक होइत संघर्ष।
सीमा बीच जखन अबैत
मचबए लगैत दुर-घर्ष।
घर्ष-दुरघर्षक बीच जखन
जिनगी करए रस्सा-कस्सी।
बीच समुद्र सिरैज मथान
पकड़ए लगैत अपन-अपन रस्सी।
आँखि मिचैनी खेल अजीब
करवन सुर-असुर बनैए।
असुर-सुर बनिते, बनैत
कर्म-अकर्म एकबट्ट करैए। ❑

साँझ-भोर

केकरो साँझ केकरो भोर
केकरो उदय केकरो अस्त
दिनक अस्त साँझ अगर
रातिक तँ उदइए छी।
बारहे घण्टा दिनो चलै छै
तेतबे टा ने रातियो होइ छै।
एक बराबर रहितो रहैत
दू रंग किए बनल छै?

साँझ साँझ गाबि जगैए
घरमुहाँ जे बाट धड़ैए।
मुदा पराती कहि परात
संग सूर्य सेहो धड़बैए।
अजब रूप दुनियाँक बनल छै
नागे बीच मणियोँ सजल छै।
मुदा मढ़ि मणि ओइ नागकेँ
रातिये बीच प्रकाश करै छै।
दीन दिनानाथक पबिते पबैत
हिहिया-हिहिया हीन कहै छै।
हनछिन-हनछिन करिते करैत
दिन सानि राति बनबै छै।

राति दिन किछु भेद ने कहियो
बनल रहैत सदए सभ लेल।
कालचक्र मानि ज्योति-अज्योति
चलैत रहए सदए सभ लेल।
घर-बाहर जीवन पसरल छै
साजि-सजि समेट फुलडाली
समय-कुसमय पूजि-पूजि
टहलैत रहए सदए फलवाड़ी।
बनिते फुलवाड़ी फलवाड़ी
रस जिनगीक सिरजै छै।
पीबिते रस फलैक मन
जिनगी जिनगीक बुझै छै। ❑

समय

समय संग तखने चलै छै
संगी बना संग मिलि चलबै।
बाट-घाट बीच देखैत-सुनैत
रस्सा-कस्सी करैत रहबै।

संगी तँ ओहन संगी छी
देखि परैख जेहेन चलबै।
तेहने पग पगहा पहिरा
आगू-पाछू चलैत रहबै।

समय ने केकरो संग धड़ै छै
ने केकरो छोड़ै छै।
अपन-अपन भागे-करमे
अपने आँखिए पकड़ै छै।

अपन पएर अपने नै देखब
पएर केना पग पकड़त।
पगडंडी बिनु पग पकड़ने
राति दिन केना चलत?

जहिना जीवन-मरण चलै छै
तहिना ने दुनियोँ बनल छै।

निर्जीवेमे जीव बसै छै
देहा-देही कहि सुनबै छै।

जहिना निर्जीव सजीव देखै छै
तहिना ने सजीवो निर्जीव देखै छै।
पकैड़ पएर एक-दोसरक
हँसैत-कनैत संग चलै छै।

सजीव निर्जीवक रस नै चिखबै
भोज्य रस केना बुझबै।
की खाएब की पीबि
बिनु ठेकाने जीब केना पेबै।

पाताल ऊपर सजल धरती
सात तल पातालो केर छै।
तहिना सात तल अकासो ऊपर
मर्त देवलोक कहबै छै।

भूवन चौदहो बीच भरैम
लहैर समुद्र केना पकड़ब।
पबिते संगी हिहिया-हिहिया
बाट अपन केना धड़ब। ❑

जिनगीक मोड़

पानि बनि पाथर जखन
धरा-धार धड़ै छै।
घाट-बाट बना-बना
जिनगीए जकाँ चलै छै।
जइसँ पहाड़ उठै छै
सएह ने सिरजए अतल सागर।
अपन-अपन नाओं गढ़ि
एक पहाड़ दोसर कहबए सागर।
जहिना धाराक मोड़ घुमै छै
तहिना ने धारो बहै छै।
बाट चलैत बटोही जेना
जिनगीक मोड़ पबै छै।
पबिते मोड़ मुरैछ जाइ छै
विराग मुरैछ कहबै छै।
बनिते मुरैछ तुरैछ जाइ छै
पकैड़ बाट एक दोसर छोड़ै छै।

मोड़े ने जोड़ो कहबै छै
एक दोसरक बाट केर।
तेहने ठीन ने देखि पड़ै छै
बाट-घाटक उनट-फेर।

जहिना-जहिना घाट घटै छै
तहिना ने बाटो मरै छै।
चलनिहार जेम्हर चलै छै
सएह ने चलनसाइर कहबै छै।
चलनसाइरो दुभिया जाइ छै
काँटो-कुश जनमै छै।
हवा-बिहारि सेहो झकझोड़ि
जे काटि एक पेड़िया बनै छै।
तेतबे नै यौ भाय साहैब?
पानि-पाथरक दोसरो किरदानी
बर्खा-बाढ़ि बनबै छै।
गामक-गाम दहा-भसा
उर्वर-उस्सर सेहो बनबै छै।
निअस्त्रा हाथ बौआ रहल
निकम्मा पएरो बनल छै।
बनिते हाथ पएर निकम्मा
जिनगी बोझ बनै छै।
बोझो कि हल्लुक-फल्लुक
समुद्र पहाड़ बन्हल छै।
बेवस बुधि बौरा-बौरा
मर्माहत भेल पड़ल छै। ❑

अकलबेड़ा

दिन-दिनक मध्यांतर जहिना
रातियो राति तहिना पबै छै।
सिर चढ़ि दिनकर देखए जब
अकलबेड़ झटैक झमकै छै।
जबकल जल पोखैर जहिना
झील-सरोवर हँसि कहबै छै।
तहिना ठमैक दिवा निशाकर
अकलबेड़ तहिना कहबै छै।
ठमकल हवा कहाँ कहै छै
मुदा, हवा बनि हवा भरै छै।
भरिते हवा भरैक-भरैक
हुरैक-हुरैक धार धड़ै छै।
बनिते धार धारण करिते
चुट्टी-पिपड़ी संगे उड़ै छै।
जीवन-मरण सिरैज-सिरैज
स्वच्छ गति स्वच्छन्द चलै छै।
जल जलमग्न करै छै
हवा तेना कहाँ करै छै।
मुदा, अकास-पताल बीच
शीतल कोमल प्रचण्ड बहै छै।

धार धरतीक समेट-समेट
अकास चढ़ि सुरसैर बहबै छै।
सुरसैर बनि अकासगंगा
नव थल हृदय परखै छै।
अपना पएरे सभ चलै छै
अपने लए सेहो चलै छै।
ऐबते भकमोड़ी-मोड़ बीच
अकलबेड़ ठमकए लगै छै।
बाजि महाभारत कहए जेना
दृष्टिकूट चौमेर बनल छै।
साए-साएक बीच सजि-सजि
आगू-पाछू सेहो जोड़ै छै।
ओइ चौमेरक बीचो-बीच
अँटकैक अँटकार बनल छै।
बिनु अँटकारे बुझि ने पेबै
दसो दिशा ओ देशांतर।
एक-दोसरकेँ जानि ने पेबै
बाम-दहिन बीचक अन्तर।

जिनगीक बीच जलमग्न सजल
भवसागर नाओं धड़बै छै।
बिनु टपान टपि केना पेबै
कानि कलैप प्रेमी कहै छै।
बिनु पुले रामो ने पौलैन
पुष्प-बाटिका बीच सीता।

दिन-राति चिकैर-चिकैर
कण्ठ फाइड़ गबै छै गीता।
गुण-मंत्र अमुल्य औषधि
देखा देलैन सेवक हनुमान।
बना मार्ग हनुमन भक्त
पौलैन देवत्वक सम्मान।

भवसागरकेँ पार पबैले
नाव तीन लागल छै।
नारद-व्यास ओ हनुमान
अपन नाव रखने छै।
काया-माया संग चलै छै
छाँह बनि रूप सेहो धेने छै।
देखिते छाँह छिछैल-छिछैल
छोड़ि संग छिड़ियाए लगै छै।
तँए की ओ फेर संग छोड़ै छै
हटिते छाँह लपैक-लपैक
जत्र-तत्र पकड़ए लगै छै।
आँखि मिचौनी खेल-बेल
कुदि-कुदि दिन-राति करै छै।
छैल-छबिली छमैक-छमैक
पानि-पाथर बनबै छै।
जे पाथर शिव भार उठाबए
कैलाश नाओं धड़बै छै।
वएह पाथर पानि बनि-बनि

अगम सागर सेहो कहबै छै।
जे पाथर उठबए भार शिव
पानि बीच डुमबै छै।
पाबि ताप सुर्जक प्रखर
हवा बनि-बनि उड़ै छै
पहाड़ सागर बनिते बनैत
सिर अकास चढ़ै छै।
घुमैड़-घुमैड़ अकास बीच
दूत, मेघदूत कहबै छै।
अलकापुरी अँटैक-अँटैक
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।
तँए कि ओ बिसैर जाइ छै
गुण, धर्म ओ कर्मक मर्म।
एक-एककेँ समेट-समेट
सभ दिन बँचबए अपन धर्म।
बनि पाथर अकास बनबै छै
अकास पाथर कहबै छै।
झहैर-झहैर-झहैर सदए
किछु ने शेष रखै छै।
आँखि मिचौनी खेल खेला
जल थल नभ दौगै छै।
तहिना ने हृदैओ सदए
अपन चालि चलै छै। ❑

धूप-छाँह

हे सुर्ज तोड़े पुछै छिअ?
ऊपर रहि तूँ किए बनौने छह
एना दोहरी बेवहार।
अपन रश्मि आगू बढ़बैमे
धरतीकेँ किए केने अन्हार।
केना रोकि तोरा दइ छह
वन-उपवन ओ जंगल।
आस लगौने धरतियो बैसल
करै छह किए मंगल-अमंगल।

बिहैस सुर्ज बाजल विह्वल!
कोनो भेद-भाव करवनो ने उठए
मनमे कहियो उठैए।
जे जेतए पकैड़-पकैड़
से अपन काज करबए लगैए।
जँ तोहू करबए चाहै छह
छाहैर छोड़ि निकलह बाहर।
जखने नजैर मिला-चलबह
तखनेसँ संग पूरए लगबह।
मर्माहत भऽ पुकारि धरती-

केना कऽ घुसैक पेबै
चारू दिस घेड़ने-ए।
केना निकैल पेबइ
जाबे हार-अन्हार नइ।
केना कऽ संग पएब तोहर
केतबो मन कानि-कलैप
भँजियाएत भाँज तोहर। ❑

माए

भेट नै पबैत शब्दकोषमे
एक्को उदाहरण माएले।
नजैर उठा जखन देखै छी
माताराम की सभ देलौं।
तीसे बर्खमे विधवा भेलौं
कहब कि अहाँसँ मइया।
मनुख बना ठाढ़ कऽ देलौं
बाँकी कि रखलौं हे मइया।
कनतोड़ी भरि अपन आभूषण
बेचि-बिकीन लगा देलौं
जुआनी गला जे सिनेह विलहलौं
बदलामे हम की कऽ देलौं।
राखि-सम्हारि घरसँ बाहर
अपन ओ लागिक परिवार।
लुटा-मेटा अपन जिनगीकेँ
जिनगी जीबैक चढ़ेलौं धार।
हँसी-खुशी जिनगी ससरैए
सटि-सटि आनो परिवार।
एक-दोसरमे भेद कहाँ-ए।
संगे-संग मानो-सम्मान।

संग-संग जीबो करै छी
संग-संग मानो-गुमान।
नव-नव चेहरा सिरैज
नव-नव काज धड़बैए।
नव-नव परिवार समेट
नव-नव सिनेह सजबैए।

अपन सद्दश अपने हे मैया
शब्द कहाँ अछि जे किछु कहबह।
अपन रूप परैस-परैस
अपने सन हमरो बनेलह। ❑

साथी

जिनगीमे साथी मिलए जँ
जीवन रस पीबे करत।
जीवने रस ने अमृत कहबए
अमृतमय जिनगी जीबे करत।
जाबे अमृतपान नै होइ छै
साथी हेराइक डरो रहै छै।
जहिना तेज धारा धारमे
हाथक साथी हथिआर (लाठी) छुटै छै।
कोमल-कड़ा बीख होइत जहिना
तेकरे ने अमृतो कहै छै।
कात-करोट किनछेरे-किनछैर
घोंघा-सितुआ मोती भेटै छै।
नै अछि जरूरी कोनो
अमृत मधुर हेबे करत।
तीतोमे बास जेकर छै
नीक-नीक फल देबे करत।
आशमे अमृत बरसै छै
निराश छोड़ि असवान बनू।
अपन जान-परान अपनेमे
मुट्ठी बान्हि-बान्हि आगू बढ़ू।

जहिना दुनियाँक रंग सतरंगी
तहिना चालि जिनगियो धड़ै छै
खसैत-उठैत, चलैत-चलैत
जिनगियो रसपान करै छै। ❑

घरक लोटिया बुड़ले अछि

घरक लोटिया बुड़ले अछि
घर-घराड़ी गेले अछि।
गाम-घर उजैर-उपैट
नाओं-ठेकान बिसरले अछि।
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
बेटा-पुतोहु निकैल घरसँ
देखलक शहर-बजार।
ओ कि फेरि घुरि घर औत
आकि घुमत हाट-बजार।
छाती मुक्का मारि लिअ
अपन जिनगी सम्हारि लिअ।
नै तँ अपनो बुड़ले अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
जइ बच्चाकेँ भेँट नै हेतै
सालक-साल माए-बाप।
दादा-दादीक कथे कि कहब
मोबाइलेसँ करत क्रिया-कलाप।
कुल-खनदान सभ गेलै अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
अंग्रेजी पढ़ि अंग्रेजिया बनि-बनि

पप्पा-मम्मी आनत घर।
बाप-दादाक कि भेद ओ बुझत
अड़ि-अड़ि बाजत निडर।
आबो कहू भाय, केना नै डुमतै
घरक लोटिया केना नै डुमतै। ❑

जुग बदलल जमाना बदलल

जुग बदलल जमाना बदलल
बदैल गेल सभ रीति-बेवहार।
चालि-ढालि सेहो बदैल गेल
बदैल गेल सभ आचार-विचार।
मुदा, राति-दिन एको ने बदलल
नै बदलल चान, सुर्ज, अकास।
पूरबा-पछबा सेहो ने बदलल
नै बदलल जिनगीक बिसवास।
दुख देखि सभ दौग रहल-ए
पाबए चाहैए सुखक भंडार।
उड़ि-उड़ि पूरबा-पछियामे
लोभक बाट पकैड़ धुरझाड़।
घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलए
दुहाइ कसि मातृभूमिक लगबए।
अपनो जिनगी देखि-देखि
करनीक तँ फलो किछु देखबए।
एक सुग्गा वन बास करैए
दोसर पोसा पिजरा कहबैए।
रहितो पिजरा पोसा सुग्गा
राम-राम दिन राति रटैए।

अपन जिनगी अपने बुझि
अपन बाट पकड़ए पड़ै छै।
अपना जिनगी लेल सदैत
जीवन-संघर्ष करए पड़ै छै।
जइ युवामे आत्मबल नै
ओइ युवाक जुआनी केहेन।
अपन हाथ अपने छाती रखि
मुहसँ अवाज निकलए जेहेन। ❑

फँसरी- 1

फँसरी लगा धड़ैन लटकलौं
पिताएल मन तँए सभ किछु केलौं।
फँसरी जखन बैसल गरदैन
मोन पड़ल दोसर मरदैन।
सुख-दुख मरदैन जनमाबए
संगे दुनू कात हटाबए।
ओद्र एक रहितो दुनू
एक दोसरकेँ दूर भगाबे।
लगल फँसरी जहाँ तनाएल
दम फुलि देहो कठुआएल।
गरदैन पकैड़ पोखैर जहिना
हँसि-हँसि हरदा बजबाएल।
जेना-जेना गीरह कसैत गेल
तहिना जिनगी मोन पड़ैत गेल।
चक्र चलैत देखि-देखि जिनगी
तड़तड़ा-तड़तड़ा खसैत गेल।
ऐ सँ नीक तँ फाँसी होइ छै
किछु कऽ धऽ कऽ तैपर चढ़ै छै।
घरक फँसरी अँतरी दुहै छै
हार रस सुधि स्वान पबै छै। ❑

गरीबी

गरीबीक गुरु-आश्रम बीच
भट्ठेसँ पढ़ैत एलौं।
भोरे उठि प्रणाम करिते
मनक असीरवाद पबैत एलौं।
राति-दिन सुरता लगौने
सदिखन चर्च करै छिऐन।
उठिते चर्च अपने आबि-आबि
जन्म–अजन्मक बात कहै छिऐन।
आँखिक आगू गुरु-गरीबीक
सुतलमे जगबै छैथ।
दू-दिसिया चालि मनुखक
पकैड़ बाँहि कहै छैथ।
अमीर-गरीबक चालि दू-दिसिया
करवनो अमीर, करवनो गरीब बनैत।
भाग्यक रेखा अगम-अथाह छै
हँसि-हँसि सदिखन सुनबैत।
गरीबी सत्-मार्ग चलबैए
हँसि कु-मार्ग अमीरी धड़बैए
भेद-कुभेद भेद बिनु बुझने
सुमार्ग कहि कुमार्ग चलबैए।
जेकरा ढौआ ढन-ढन करए

ओ केना पहुँचत मधुशाला।
चिकैड़-चिकैड़ गरीबनाथ कहए
भोजन नै छी सुआद मशाला।
अपने हाथे पकैड़ बाँहि
सीमा सरहद देखि चलबैए।
अपन आड़ि-मेड़ अपने पकैड़
हँसि-हँसि अपन चालि धड़बैए।
जेकरा अहाँ अमीर बुझै छी
नै छिऐक ओ अमीरी।
आ ने जेकरा गरीब बुझै छी
नै छिऐक ओहो गरीबी।
बुद्धदेव किए राज-पाट छोड़लैन
कबीर किए मग्गह खसला
भिक्षुक बेना पकैड़ किए
जिनगी भीखमंगाक बनेला।
गरीबीक जे राह पकैड़-पकैड़
राही बनि रनिबास चलैए।
ब्रह्मा, विष्णु ओ शिवशंकर
पदे-पद दर्शन पबैए।
यएह गरीबी आ अमीरीक
धड़-धड़ जीवन धार बहैए
सागर-गंगा हेराएल कहाँ
तिले-तिल चलैत रहैए। ❑

दबाइए रोग

कहिया केतए-सँ रोगाएल
रोगे ओछाइन धेने एलौं।
जी तोड़ि तरद्दुतो करैत
रोगे संग-संग जीबैत एलौं।
रोगो कहाँ छोड़ए चाहैए
अपन ओझराएल-पोझराएल बान
रोगाएल देखि-देखि कहैए
ओ अछिए महा बूड़िबान।
उक्कठ-पाकठ बरमहल करैए
करवनो नै छोड़ए अपन सान।
ताकि-ताकि मीठ दवाइ आनि
गमबए चाहैए अपन जान।
कहै छेलै पेट पाचन बिगड़ल
पीबए लगलौं महाजाइम।
आठे दिन अबैत-अबैत
सरदी-बोखार पकड़लक तानि।
कोनो कि एना आइए होइए
आकि होइत आएल जुग-जुगसँ।
जएह पोषक सएह शोषक बनि
लीड़ी-बीड़ी करैत जुग-जुगसँ।
मनुरव-मनुरवक बीच अड़िया

घुमा बुधि बुधियार बनौलक।
दिन-राति छाँटि-छूँटि आड़ि
साबरमंत्र पढ़ा मुग्ध बनौलक।
मनतरो कि हरही-सुरही
पीठिया-पीठिया मन घुमौलक।
हँसि-हँसि पकैड़ चालि
बुधिसँ यारी करौलक।
छी ठाढ़ बुधियार बनि-बनि
जिनगीक परिचय कहाँ पेलौं।
अपनो जिनगी नै देखै छी
केतए-सँ केतए एलौं-गेलौं।
पाँच तत्त्वक जीवन पाबि-पाबि
जिनगीमे किछु नै केलौं
अकारथ जिनगी बना-बना
बेर्थमे जिनगी गमेलौं।
कि कहब किछु ने फुड़ैए
पीछराह बाट पकैड़ लेलौं।
केम्हरो-सँ-केम्हरो पिछैड़-पिछैड़
मृत्युकेँ सदैत नतैत एलौं।
भार बना जीवन लीलाकेँ
कुहैर-कुहैर जीबै छी।
आशा-आसी ताकि रहल छी
जिनगी बाट कटै छी। ❑

मुँहक झालि

मुँहक झालि बजौने की हएत
काजक झालि बजबए पड़त।
फोकला-खाखव अन्ने की
सुभर दाना उपजबए पड़त।
जाधैर धरती परती रहतै
चारागाह दिन-रातियो बनतै।
चरनिहारोक चालि असंख्य छै
दिन-राति चरबे करतै।
सूर्जे जकाँ ओहो रहै छै
सूर्जेक संग चलबो करै छै।
राति-दिन बेड़ा-बेड़ा
समय देखि चड़बो करै छै।
देहधारी जीवे टा नहि
विवेकियो पुरुष कहबै छी
लाज-शर्म जँ उठा-पीबि
तँ अपन बिटारि अपने करै छी।
जँ धरतीपर जन्म लेलौं
किछु देबो किछु लेबो सीखू।
अपने केलहा संग चलै छै
गीरह बान्हि कन्हेठ राखू।

जहिना वनमे वृक्ष बहुत छै
जीवो-जन्तु तहिना भरल छै।
पाँच तत्त्व निर्मित जे कहबै
पाँचे तत्त्वमे विलीनो होइ छै।
बिनु भक्तिक मुक्ति कहाँ
बिनु मुक्तिक जिनगी कहाँ छै।
भक्ति-मुक्तिक बीच बटोही
जिनगीक रसपान करै छै।
मुँहक झालि लहरी नहि
कर्मक स्वरलहरी सीखू
अपन इतिहास अपने हाथसँ
स्वर्णाक्षरमे लिखनाइ सीखू। ❑

किछु सीखू किछु करू

जिनगीमे किछु करब सीखू
जिनगीमे किछु लड़ब सीखू।
सभ जनै छी, सभ देखै छी
अज्ञान-अबोध बनि-बनि अबै छी।
सज्ञान-सुबोध तखने बनब
घर्षक बाट जिनगी धड़ब।
एक-दोसरमे तखन बदलै छै
बीच परिवर्तनक खेल चलै छै।
जहिना रीतु परिवर्तन होइ छै
तहिना कुरीत सुरीत सेहो बनै छै।
जहिना जाड़ गरमी बदलै छै
तहिना ने गरमियोँ जाड़ बदलै छै।
बिते पानि धरती धमैक
नवरंगी रूप बना सजै छै।
जिनगियोक तँ खेल एहिना
अहीमे सभ किछु बनै छै।
कियो भक्त भगवान पबैत
तँ कियो पबैत भजन भगवत्।
कियो योद्धा बनि अस्त्र उठबैत
तँ कियो कुकर्म-सुकर्म गढ़ैत।

आँखि उठा घर-बाहर देखू
अपन कालखण्ड अपने परखू।
पबिते परेख जीवन-मौसम केर
सौनक सोहनगर सुगन्ध बिखरू। ❑

पत्नी

सहस्र स्वरूप धड़ैत जहिना
ब्रह्म, विष्णु ओ महादेव।
नारी-पुरुष सेहो तहिना
सहस्र श्रृंगार करैत चलैत।

ब्रह्म-जीव, बीच माया जहिना
संग रहि संग चलबो करैत।
तहिना ने नारी-पुरुष संग
आदियेसँ चलि आबि रहैत।

सुगरक चरबाहि करैत धर्मराज
राता-राती बना देखौलैन।
माटि सटल ठमकल सुगरकेँ
महिंस बना आकास उठौलैन।

बापे घरसँ सीख आबि बेटी
पतिक संग जीवन धारण करैत।
गिरहस्त घरक बेटीओ तहिना
घर-परिवारक लूरि-बुधि सिखैत।

एक देश दोसरसँ जहिना
हटल-सटल सेहो चलैत।

तहिना ने गामो-समाज बीच
बेक्त-परिवार सेहो चलैत।
पूर्व लूरि संग कन्या जहिना
पतिक सजाएल संग धड़ैत।
तहिना ने सजल-सुकोमल
पत्नीक हाथ लपैक पकड़ैत।

गिरहस्तीक रूप सजबैत पत्नी
बोनिहारक संग बनली बोनहारिन
जिनगीक भार उठैत देखि-देखि
हृदय खोलि छाती लगौलयैन।

चिन्ता नै उमेरक कनियोँ
भरिसक लगले-भीड़ले छी।
कनी एम्हर आकि ओम्हर कनी
मस्तीसँ मौज करिते छी।

अपन बुझि करैत अपना-ले
जिनगीक धार टपि-टपि बढ़ैत।
कारीगरी संग करुआरि पकैड़
संग मिलि संगे चलैत।

रंग-बिरंगक पहाड़-पठार बीच
वन-उपवन सेहो सजल-ए।
हर्ष-विषादक बीच बहि तहिना

नजैर नजैरक बीच चलैए।

कियो-लग कियो दूर देखि
थामि-थामि कऽ डेग उठबैए।
कियो दूर-लग दुनूक बीच
झटैक-झटैक सेहो चलैए। ❑

चेतन चाचा

चेत-चेत चलू चेतन चाचा
सरसड़ाइत समय ससरैए।
समय छोड़ि कतबाहि जखने
ठहैक-ठहैक नक्षत्र कहैए।
आगू डेग उठबैसँ पहिने
चारू दिशा देखैत चलू।
चारू कोण ठेकना-ठेकना
आगू डेग बढ़बैत चलू।
जिनगीक बाट सपाट कहाँ छै
काँट-कुश छिड़ियाएले अछि।
देखि-थामि पएर रखि-रखि
तिले-तिल ससरैएक अछि।
ग्रह-नक्षत्र ओ सुर्ज-चान
रूटिंग बनल जेकर दिन-रातिक।
तहिना ने रूटिंगो बनल छै
दैहिक, दैविक ओ भौतिक।
क्षण-पल, सेकेण्ड, मिनट
अछि बनौने सीमा जहिना।
देव-दानव सेहो अपन
बाट बनौने अछि तहिना।
खान-पान पकैड़ चालिकेँ

जहिना जीवन पद्धति बदलैए।
बान्हि मन साधि तन
साधक बनि बनि जीबैए।
साध्य साधि साधन करैत
साधक नाओं धड़बैए।
साधक बनि करैत साधना
भक्त–भूमि पकड़ैए।
प्रेमी-प्रेमिका बीच जहिना
प्रेम अपन लीला करैए।
तहिना भक्त–भगवान बीच
प्रेमास्पदक पुल बनैए।
सात-समुद्र ओ सात पहाड़
सतरंगी बिजुड़ी चमकैए।
प्रखर ज्योति-सँ-ज्योतिर्मय कऽ
भवसागर पार करैए। ❑

पौरुष

पौरुष पुरुषत्वक सुप्त सुअन
प्रस्फुटित भऽ पुष्पित बनैए।
चढ़ि पवन रथ भरमि अकास
सिख-नख रूप सजबैए।
पाथरसँ निकैल-निकैल
शिखर नीर धारण करैए।
झड़-झड़ करति झहैर-झहैर
हृदय पाताल पकड़ैए।
एक जल पाथर पग पकैड़
दोसर पकड़ै शून्य अकास।
पबिते प्रेमी हृदय प्रेम मिलि
जूरशीतल पावनि प्रकाश।
सिनेह सिक्त हृदय सटि
ससैर-ससैर ससड़ए सागर।
तरोट-उपरोट माटि मिलि
हृदय सिनेह सजबैत गागर।
माटि जेना सागर सजै छै
पातालो उमड़ै तहिना छै।
हवो कहाँ मानै छै छान
पकैड़ बॉहि बिचड़ए लगै छै।
जखने तीनू सम बनै छै

पवन पावक पकड़ै छै।
पानियो कहाँ पछुआ चाहै छै
त्रिवेणीक धुन धड़ै छै।
धुने धूनि-धूनि धूर सिरैज
चौड़गर बाट बनबै छै।
लट-पट, सट-पट करैत चलैत
सीमाक पाड़ पकड़ै छै।
टपिते टपान सीमा केर
नव दुनियाँ झलकए लगै छै।
पयस्विनी संग मिलि वसुधा
पाथर पहाड़ सजबए लगै छै।
अनगिनित दुनियाँ बनल छै
ब्रह्म-जीव माया सजल छै।
अनेकानेक जीव ओ ब्रह्म
योगमाया सिरैज सजबै छै।
बनिते संगी संग चलै छै
अनेकानेक दर्शन पबै छै।
कीड़ी-फतिंगी, झाड़-झूड़
सुन्दर शीतल सुख पबै छै।
हरियर-हरियर वन सजल छै
कोमल-किसलय सेहो सजल छै।
जमुना धार बीच सौभर ॠृषि
राति-दिन तपस्या करै छै।
बाल्मीकि, भारद्वाज, ॠृगी
निच्चाँ नजैर निहारि रहल छै।

देखि-देखि धारण धड़ि
मने-मन तड़ैप कहै छै।
पबिते एक-दोसर-तेसर
चारिम संग दौगए लगै छै।
पाँचम केर पछुआ पकैड़
संगे-संग दौगए लगै छै।
संग मिलि पाँचो नाचि-गाबि
पञ्च-तत्त्व लहैर मिलबै छै।
पाँच तत्त्व निरमित संसार
संग मिलि सभ कहै छै।
उदय-अस्त देखैत-सुनैत
अपनेमे समाए लगै छै।
पाँच मिलि समाज बनि
पञ्च परमेश्वर कहबै छै।
वैतरणी तरणि तड़ैण
सिर-शिव गंग चढ़ै छै।
दुनियाँक रूप पकैड़-पकैड़
ऋृषि-मुनी योद्धा खिंचै छै।
दलकल-सलकल पिछैड़तो पिछैड़
छाती मुक्का मारि कहै छै।
मुक्को केर तँ अजीब किरदानी
कियो अपने मारए कियो दोसरात
झपैट आँखि पकैड़ बॉहि
धरती धड़बैत तेसरात। ❑

घोड़ मन- 1

घोड़ मन घोड़छान तोड़ि
चौदहो लोक भरमए लगल।
सातो-सोपान पताल टपि
सातो अकास उड़ए लगल।
समय संग जहिना बिलगैए
मिसरी-मक्खन ओ निर्मल जल
हंस उड़ि परमहंस बनि
तहिना उड़ैत मन देह-स्थल।
स्थूल-सूक्ष्म बँटि-बँटि जहिना
दृश्य-भाव कहबैए।
एक्के आँखिए दुनू देखै छी।
अचेत मन भरमैए।
निकैल देह धारण करैए
आत्म-परमात्म दर्शन पबैए।
पबिते दर्शन मगन भऽ भऽ
सूर-तान, वीणा धड़ैए।
मथिते मथानी जहिना
घी-पानि बिलगए लगैए।
जले बीच दुनू समाएल
उठि एक सिर चढ़ए लगैए।

लोहिया चढ़ल आगि बीच जहिना
अपन चालि मक्खन नचैए।
काह-कूह कतबाहि फेक-फेक
पेनी बीच बैस जमैए।
पेनी बीच... ।



घोड़ मन- 2

गोबर घोड़ाइते पानि जहिना
गोबराह रूप धारण करैए
गोबरेक गन्ध पसारि-पसारि
गोबरछत्ता बनि-बनि छितिराइए।
सुविचार कुविचारो तहिना
छने-छन छीन होइत चलैए।
गिरगिट रंग पकैड़-पकैड़
गिरगिटिया चालि चलए लगैए।
गिरगिटिया मनुक्खो तहिना
दिन-राति बदलैत चलैए
गीरगिटेक जहर सिरैज-सिरैज
बीख सेहो उगलए लगैए।
भेद-कुभेद मर्म बिनु बुझने
देखा-देखी ओढ़ैत चलैए
ओढ़ि-ओढ़ि ओझरा-पोझरा
डुबकुनियाँ काटि मरैए।
गाछक ऊपर डारि बीच जहिना
बाँझी अपन बास करैए
झड़मनुखो मनुख बीच तहिना
ऊपरे-ऊपर चालि मारैए।

सात समुद्र बीच मनुख
दसो दिशाक दर्शन पबैए
चीन-पहचीन केने बिना
जिनगीक बाट पकड़ैए। ❑

घोड़ मन- 3

प्रकृतोक तँ प्रकृत गजब छै
सुगन्ध-कुगन्ध फूल खिलबैए।
सु-पारखी सुरैख-परैख
कु-पारखी दिन-राति मरैए।

परखिनिहार परेख-परैख
एक-दोसरक भेद बुझैए।
धार-मझधारक बीच तहिना
हँसैत-कुदैत चलैए।

बेवस मन बहैट-बहैट
सीरा-भट्ठा बिसरए लगैए
जान बँचबैक धरानी कोनो
लपैक-लपैक पकड़ए चाहैए।

सत्ताक भत्ता छिड़ियाएल छै
फानी, फनकी बनि लागल छै।
चिड़चिड़ीक फड़ जकाँ
चुभि पएर टीको नोछड़ै छै।

बिनु पाँखिक हंसा जहिना
तीनू लोक विचरण करैए।
दिन-रातिक भेद बुझि-बुझि
अज्ञान-ज्ञान-सज्ञान बनैए।

जखने अज्ञान सज्ञान बनै छै
अपने आँखिये सभ देखै छै।
जखने अपन आँखि अपने
देखिते, दुनियाँ देखए लगै छै।
देखिते दुनियाँ...। ❑

घोड़ मन- 4

आँखि मिचौनी पाश बैस
ब्रह्म-जीव माया खेलैए।
समय पाबि तहिना ने
अज्ञानो सज्ञानक चालि चलैए।
होइत आएल आदिये-सँ
अज्ञान-ज्ञान बीच संघर्ष
ताधैर चलिते रहत
जाधैर अन्हार इजोत बनत।
पछुआ छोर सम्हारि-सम्हारि
ऐगला पकड़ैत चलू।
अतीत केर स्मृति बना
समद्रष्टा बनैत चलत।
एक छोरक बाट देखि
भूत-वर्तमान भविस देखत।
भविस तँ भविसे छी
भविस-वर्तमान बनबैत चलत।
डेंगी नाह जहिना यात्री
धार पार करैए।
डगमगाइत देह मड़मड़ाइत मन
जीवन धाम पहुँचैए। ❑

अलकक चान

ऐबते गाम चमकए लगलै
ताकि तरेगन बिछए लगलै।
ज्योति मिला परैख-परैख
अकास सिर सजबए लगलै।
रंग-रंगक तारा सजल छै
लग-पास संग सेहो हटल छै।
कोणे-काणी सजि-धजि
मोती-कंचन माला बनल छै।

धूप-छाँहक पाश पाबि-पाबि
नब-पुराणक भेद मिटल छै।
धाम ज्ञानक चोला पहीरि-पहीरि
शब्द–शब्दक जाल पसरल छै।

मुर्ति जखन कागत उतैर
रूप भगवान धारण करै छै।
झड़ि-झड़ि झहैर असल
नकल रूप धड़ए लगै छै।

जहिना कार्बन कॉपी होइ छै
नकल कार्बन चढ़ए लगै छै।

तहिना अरूप-सरूप संग
चुट्टी चालि चलए लगै छै।

मुसक चालि पकैड़ जहिना
मुसरी सेहो घुसकए लगै छै।
जाल-महजाल पकैड़-पकैड़
पकैड़ सुत काटए लगै छै।

आदिक दुहाइ लगा-लगा
आधि-व्याधि सिरजए लगै छै
मकड़-जालक रूप गढ़ि-गढ़ि
अपने चालिए फँसए लगै छै।

अलकक चान हाँसू पकैड़
खल-खल सतमी पार करै छै।
अट्टहास अष्टमी केर पबिते
नब-रंग नवमी कहबै छै।

पबिते नौमीक चान अकलक
पुनो दिस ससरए लगै छै।
पुनोक परताप पकैड़-पकैड़
पूर-चान कहबए लगै छै।

एक चान यमुना उतैर
महल ताज देखए लगै छै।

दोसर चान पून्यात्मा बनि
आत्म लोक बिचड़ए लगै छै।

डेग-डेग दर्शन पबैत
डेगे-डेग ससरए लगै छै।
उड़ि अकास धरती पकैड़
चान-सुर्ज कहबए लगै छै।

प्रीत-रीति पकैड़-पकैड़
अपन-अपन बेथा गबै छै
राग-रागिणी राग भरि-भरि
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।

जमुनाक जल बनि-बनि
नीर सरस्वती चढ़बै छै।
गाड़ा-जोड़ी करैत दुनू
गंगा बाट बनै छै।

तीनू मिलि तिरवेणी कहि
सूर-तान-राग भरै छै।
अलाप-परलाप भरि-भरि
परियाण परियाग करै छै। ❑

शिशवोनी

बुधि-बिचड़ी कऽ पत्नी कहलैन
शीशो लगबैक विचारो देलैन।
नहियोँ मन, तैयो सुनलयैन
जबाब नै किछु दऽ सकलयैन।
मने-मन विचारए लगलौं
मुँह फोड़ि किछुओ ने बजलौं।
दोहरा कऽ ओहो ने पुछलैन
आगूक बात किछुओ ने कहलैन।
मुदा नजैर निहारै छेलैन
पचास गाछ, पिताक देल छेलैन।
भोग-भोगि उपटा देलिऐन
शीशोक गाछ सठा देलिऐन।
बाल-बोध चेतन जब बनतै
माए-बापक करतबो कहतै।
बाबा-बाप, बेटाक हिसाब
मने-मन सेहो ने जोड़तै।
चलै लए चलनसारि बनल छै
आगू-पाछू सभ चलै छै।
ऐगलाक पैरक रेगहा-सिरखार
पकैड़-पकैड़ पछिलो चलै छै।

जँ उपयोगी बौस नै हेतै
छोड़ैमे असोकर्ज नै हेतै
जँ उपयोगी बौस भविसक
कर्म-अकर्म किए नै हेतै।

बीघा भरिक बाग-बगीचा
बेटा सिर लटकौने गेला।
रंग-बिरंगक फल वृक्ष लगा
बेख-बुनियादि पटकने गेला।
चारू आड़ि अड़िया-अड़िया
अड़कस दऽ आड़ा बनौलैन।
आम, कटहर, बेल, लीचीक संग
आड़ापर शीशो लगौलैन।
नमती-चौड़ी हिसाबसँ
नापि-नापि सभ गाछ लगौलैन
आधा लग्गी नाला खुनि-खुनि
आधा लग्गी आड़ा बनौलैन।
आड़ा खुट्टी ठोकि-ठोकि
जनमाउ बीआ सेहो लगौलैन।
काटि-छाँटि मुँह-कान बना
गाछ पचास शीशो पुरौलैन।
जाधैर जिनगी नीक चलल
शीशो-पांग जारन चलल
जेना-जेना दिन खिलचल
जारन संग गाछो बिलटल।

पत्नीक पवित्र परामर्श पकैड़
मने-मन मनन करए लगलौं
मसैल-मसैल मन मथि-मथि
बाल-बोध ले विचारए लगलौं
घुरिया-घुरिया, फिरिया-फिरिया
घुरछी मन लगए लगल।
की नीक की अधला
निहारि-निहारि निहारए लगल।
सु-नीक, कु-नीक बाटे-बाट
रस्ते–पेड़ै औनाए लगलौं
बीच बाट अटैक ठाढ़
गुन-धुन करैत विचारए लगलौं।
इंच-इंच भूमि जोड़ि-मोड़ि
हीराखान बनबए लगलौं।
आधा लग्गी पेट काटि
आधा लग्गी आड़ा बनेलौं।
आड़ा पहेट-पहेट पेट भरि
समतल-चौरस बना देलिऐ।
धाड़िये-धाड़ी लगा-लगा
तीन धाड़ी शीशो लगा देलिऐ।
कलैस मन फलैक उठल
परामर्श पत्नीक पनैप उठल
लहकैत मन चहकए लगल
प्रभाती पक्षीक सुनए लगल।

पट बना बनेलौं पनिबट
जइमे पानिक निकास बनेलौं
आड़ा-आड़ी सजा-सजा
तीन धाड़ी माला बनेलौं
जहिना आड़िक आड़ बनै छै
तहिना आड़ आड़िक बनेलौं।
ठामे-ठाम साबे सजि-धजि
तीन धाड़ी साबे लगेलौं
अद्राक आद्रसँ आद्रित भऽ भऽ
शीशोक गाछ पोनगि उठल।
करवनो पानि-माटि पीबि
तँ करवनो संगे-संग रहए लगल।
प्रेमी-प्रेमिका चालि पकैड़
सिरजन सृष्टि करए लगल
बितते बरसात भभा उठल
शीशो गाछ जगमगा उठल
आसिन-आसा पाबि-पाबि
धाड़ी बनि धड़ियाए लगल।
साबे ससैर आड़ा पकैड़
ऊपर-निच्चाँ पसरए लगल।
रक्षक-दक्षक संग पकैड़
संगे-संग चलए लगल।
जेकरा बकरियो ने पुछए
आ कि डरे कात हटैए।

एक-दोसराक रक्षा करैत
संग मिलि चलए लगैए।

साले भरि बीतैत-बीतैत
धाड़ी शीशोक धड़िया गेल।
मुइल लक्ष्मी जीबैत देखि-देखि
हारल मन हरिआ गेल।
बितते कातिक काटि साबे
अँगने-खरिहाने पसारलौं
आठे दिनक रौद पीबि
जुट्टी गुहि मुट्ठी बनेलौं।
साले-साल जहिना उठए
सड़ैक शीशो सड़कए लगल।
देखिते दुरदिन दिन कुदिन
सुदिन दिन देखए लगल।

सु-दिन दिन अबैत देखि
पत्नीक मन कु-दिन पड़लैन
कुदिन-सुदिन बीच घुरिया
दिन फल पबए लगलैन।
पबिते फल जिनगीक
लहैर-लहैर लहरए लगलैन।
प्रेमातुर भऽ बढ़ि ससैर
छाती-हृदय सेहो जुड़ेलैन।
जइ छाती दूध पिआ बाल

बोध वृक्ष सिरजन करै छै।
अकास उठैत वृक्ष देखि
तड़पैत मन कलशाए लगै छै।
तपसी बनि तपस्या केलौं
समय पाबि फलो नीक पेलौं
बोध-वृक्ष रूप देखि-देखि
जिनगीक गुन-धाम पहुँचलौं।
शिशवोनी देखि-देखि मन
उत्साहसँ उत्साहित बनल
प्रेमातुर भऽ प्रेम जहिना
प्रेमसँ प्रेमास्पद बनल। ❑

फगुआ

जुआनीक जे रूप देखबैए
तेकरेसँ ठट्ठा करै छी।
अपन करम-धरम बिसैर
फगुआ हँसि-हँसि गबै छी।
दोहाकेँ कवित्त बीच बैसा
कवित्त-दोहा मिलबैत चलै छी।
रचि कविता जोगिरा केर
स-र- र- र- र- गर्द करै छी।
रूप सजि करता-धड़ताक
श्मशान रूप बनबै छी
रस फूल माधुर्य फलक
जी-जान कहाँ चिखै छी।
जहिना सरसो-झुन-झुन करैए
गहुमनियाँ रंग लपकैत रहैए।
केचुआ छोड़ैक मसीम परैख
लपेट-लपेट लपटए लगैए।
ताड़ वीणाक कम्पन्न जहिना
ओर-छोर झनकबए लगैए।
तहिना पैरक उठल झुन-झुन
डारि-पात, सिर डोलबैए।

पाबि फागु वसुन्धरा जहिना
अलसाएल-मलसाएल झुमैए।
पाबि जुआनी बिरह तहिना
विरह विरहा विहराइ-ए।
ढोल-डम्फ ताल मिला-मिला
दुनू नाचए-गाबए लगैए।
फड़ल-फुलाएल देखि वसुधा
अकास पवन डोलए लगैए।
चान-सुर्ज बैस दुनू संग
हिस्सा-बखरा फड़िअबए लगैए।
जहिना पुनोक चान चमकए
मध्य–मस्त सुर्ज सेहो हँसैए।
अपन-अपन दशा-दिशा
मिलि दुनू गाबए लगैए।
बामा हाथ थिड़ैक-थिड़ैक
दहिना चमैक चमकए लगैए।
जहिना जाड़क पाला पकैड़
शीतल हृदय मिलि जुड़ौलक।
ठिठुरल-ठिठुड़ल पकैड़ कली
वसन्त गीत सेहो सिरजौलक।
गीत वसन्त सेहो...। ❑

शील

द्रवित होइत पानि जहिना
सुख-शील रूप धड़ैए।
तहिना ने गाछो-बिरीछ
फल जीवन, मृत्यु सुख बँटैए।

जे सृष्टि सिरजए वन-सागर
सएह ने सिरजैत वन-मनुख।
बनि मनुख बनबास करए जौं
पबैत राम गुण, शील धनुष।

लस्सा-दूध नाम धड़ए एक
दोसर सागर-सरोवर कहबै छै।
लहू कहि-कहि जीव धड़ए
वनमानुख खून मनुख कहबै छै।

सुखा खून अपन अस्तित्व
शील-सिरजक कर्ता कहबैए।
शीले तँ रूप सु-भावक
सएह ने बढ़ि सुशील कहबैए।

पबिते गुण भव-सागरमे
गुणी बनि गुण खिंचैत रहैए।
छाती लगा बान्हि वंशी
रस्सीक संग संग रस पबैए।

शील जखन गुण बनि वन
मनुख गुण खिंचए लगैए
गुणी बनि गुदगुदबैत मन
जीवन सुख संचार करैए।

करवनो रस्सा-कस्सी करैत
करवनो ढील ढल चलए लगैए।
शीतल-समीर पाबि करवनो
संगे-संग विश्रम-विस्मृति हुअ लगैए।

दिन-रातिक बीच समीर
समर कुरुक्षेत्र कहबए लगैए।
उनैट-पुनैट, ओंघरा-पोंघरा
रणभूमि सिरजन सिरजए लगैए।

जे फल पाबि राम बनबौलैन
समुद्र बीच पथरक पुल।
तहिये-सँ उड़ए लगलैन
रस्ता-बाटक मिझिराएल धूल।

सएह फल पाबि रचलैन कृष्ण
भारतसँ बनैत महाभारत।
हिमालयसँ समुद्र, समुद्र हिमालय
हम-हिमवान सहित पर्वत।

वएह थिक हमर भारत।
भरत बनि भ्रमैत भँबर
चरण-सिर धड़ैत जहिना
सएह चरण सुरसैर सिरैज
शिव-कैलाश समाएल जहिना।

पिघैल पाथर पथ पेब जहिना
पाथर वर्फ कहबए लगै छै।
सिरैज शील शीला बनि-बनि
शीला पत्थर कहबए लगै छै।

नव रूप सिरैज-सिरैज
जल रूप धारण करैए।
बनि जल-कण उड़ि अकास
हवा संग झुमैत चलैए।

प्रेमी-प्रेमिका बीच दुनू
अश्रु-कण बिल्हैत चलैए।
वएह कनकनाइत बढ़ि
ओस बनि धरती सिंचैए।

धरिते धड़ा-धरती कन्हुआ
हाथ दुनू छाती सटबैए।
मिलि दुनू सिंगार सजि
वसुदेव रूप धारण करैए।

बनि वसुन्धरा बनि बसुदेव
धार-धाराक धारणा धड़ैए।
पबिते जल जलधार बीच
राइ-पहाड़ रूप सजबए लगैए।

बीच-बीच बाट-घाट बनि
रूप श्रृंगार सजबए लगैए।
एक घाट दोसर नदी बनि
झील, सरोवर सागर कहबैए।

झिलहोरि झील खेलाइत रश्मि
आकर्षित-आकर्षण करैए।
प्रेमास्पद पबिते पाबि
प्रेम-प्रेमी कहबए लगैए।

पाबि प्रेमी प्रेमी जखन
सागर गंगा मिलए लगैए।
बॉसक पुल बना समुद्र
गंगा-सागर स्नान करैए।

वएह पवित्र जल सागर
कंद पहाड़ बनैए।
बैस गुफा जोगी-जती
भगवत-भजन करैए।

जहिना भूखल पेट मांगए
तहिना ने मनो मंगै छै।
भोज्यक तृष्णा दुनूक बीच
भजन-भोजन कहबैत चलै छै।

बनि शीला समुद्र बीच
पहाड़ बनि-बनि ठाढ़ होइए
शिकारी पहाड़ घुमि-घुमि
मन-माफित शिकार करैए।

सभ दिनसँ होइत आएल
देव-दानवक बीच रगगड़।
रगैड़-रगैड़ रगड़ैत चलि
मुंडे-मुंड पसरल झगगड़।

झगगड़ दू दिस चलै छै
एक-रगैड़ सुरधाम बढ़ै छै।
तँ दोसर धरती धारण करै छै।
स्वर्ग-नर्कक विचमानि कऽ
अकास-सँ-धरती खसबै छै।

रंग-बिरंगी सिरैज-सिरैज
दिशा-हीन बनबए लगै छै।
उपदेशक तँ सभ बनैए
अपना ले की सभ सोचै छै।

असार-सार संसार बुझि-बुझि
शील-धरम कहाँ बुझैए।
जिनगीक शील धर्म छोड़ि
मनुख अकार धारण करैए।

राम-नाम सत् छी
आखिर दिन कहए पड़ै छै।
जीतामे गुहा-भत्ता
मुइला सुख पबए लगै छै। ❑

प्रिय

उठिते वेदन उधिआ लगए जब
रच-बिचड़ी हुअ लगै छै।
कर्ण-प्रिय, प्रिय वाणी वीण-वीण
रूप मधुर सिरजए लगै छै।
दूर-दूर जंगल पसरल
पसरल छै ग्रह-नक्षत्र सगर
तरेगन छिड़िया-बितिया
सजबए रूप पठार-पहाड़।
धरती ऊपर शून्य बसल छै
नाओं धरौने अपन अकास।
चुसि रस माटि-पानिक
संग चलैए रौद-वसात।
नै छै ओर-छोर अकासक
एक छोर धरती धेने छै।
लपेट-लपेट लपेटा डोर
विधाता गुड्डी उड़बै छै।
बनि विधकरी विधाता
सिरजन शक्ति जगबै छै।
कर्मभूमि, जन्मभूमि ओ मर्मभूमि
कला-जीवन सिखबै छै।

सुगबा-साड़ी पहीरि देखि कियो
गुणधाम रूप बुझए लगै छै
हंस चालि पकैड़-पकैड़
वाहिनी हंस कहबए लगै छै।
चलि चालि हंसवाहिनीक
सुरधाम नचबए लगै छै
सजि केश सुकेसिनी गढ़ि
रूपवती कहबए लगै छै।
गुणवती रूपवती बनि-बनि
गुणधाम बिसरए लगै छै।
गुण पकैड़ जखन सुकेसिनी
धार जमुना सिरजए लगै छै।
कारी रंग पकैड़-पकैड़
सिरसिराइत सिर सजबए लगै छै।
शुभ्र-सोभाव, गुण सिरैज
गुणवती रूप बनबए लगै छै।
गुणवती रूपवती बनि-बनि
गंगा-सरस्वती मिलए लगै छै।
जैठाम तीनू धार सटए
त्रिवेणी घाट बनबए लगै छै।
घाट-स्नान कऽ तीनू सहेली
अलड़ैत-मलड़ैत चलए लगै छै।
भेद-कुभेद मेटा-मेटा
गंगा-सागर जा डुमै छै।

सम्पन्न शब्द, शैली सम्पन्न
शब्द कोष सिरजए लगै छै।
जड़ि-छीप पकैड़ भाषाक
संसार-साहित्य गढ़ए लगै छै।
अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र सजि
पथ-प्रदर्शन करए लगै छै।
पथ प्रिय प्रेमी पाबि-पाबि
पथिक पथ चलए लगै छै।
लोक अनेक, दुनियाँ अनेक
पथ अनेक अनेक पथबाह।
अपन खेत जहिना जोतए
बरदक संग अपन हरबाह।

बेथा-कथा सम्पन्न गढ़ि
कवित्त संग मिलि चलै छै
दोहा, चौपाइ, छप्पय ओ कवित्त
संग मिलि कविता कहबै छै।
आँखि, कान, नाक मिलि जहिना
रूप देह सजबै छै।
मुँह बीच जिहिया पकैड़
वाणी वीणा तार खिंचै छै।
तड़ैप-तड़ैप मनक बेथा
दुबट्टी ओझर जा फँसै छै।
शब्द वाण जा-जा कहै छै

मुदा ओझर कहाँ बदलै छै।
ओझर जखन चालि पकैड़
अस्त्र हाथ उठबै छै
कर्मभूमि पकैड़ धरती
शब्दवाण छोड़ै छै।

नख-सिख रूप जेतए सजै छै
पूर्णिमाक चान कहबए लगै छै।
पूनोक गौरव गाथा कहि-कहि
मास सलोनी पबए लगै छै।
जहिना सौनक सिस्की सिहकए
तहिना सिहकए वीणाक तार।
मनोक तार तहिना सिहैक
सिरैज अपन तहिना उद्गार।

जहिना धरती अकास बीच
गाछ-बिरीछ लहलह करैत।
तहिना विवेक विचार संग
सदि हँसि-गाबि कहैत।
हजार नाओं जहिना हरि
हजार हाथ तहिना सजल छै।
हजार मन सेहो कहैत
हजार कोस भरल छै। ❑

अपनेपर

अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।
अपने दिस तकै छी
अपने ने देखि पबै छी
घुरि पाछू जखन देखै छी
जुगक अनुकूल समाज देखै छी।
ऊपरे-ऊपर नीपल-पोतल
भीतरमे कंकाल देखै छी।
ओही समाजक बीच बसल
अपनो पुरुखाक इतिहास पबै छी।
बिहिया-बिहिया बिहियबिते
ढहल-ढनमनाएल देखै छी।

निश्चित सीमा बीच गाम
निश्चित जाति बान्हल छी।
टोलबैया कहि निश्चित जातिक
पतियानी लागि सटल छी।
सटल-सटल पतियानीक बीच
हटल-सटल सेहो पबै छी।
सटल-हटल आ कि हटल-सटल
गामक थाह कहाँ पबै छी।

चौहद्दी बीच केतौ समाज
केतौ जाति समाज कहबै छी।
केतौ-केतौ पुरुखक समाज
तँ केतौ पंथाय समाज बनै छी।
उठिते नजैर भूत-भविस
सिहरनसँ सिहरए लगैए।
अकारथ जिनगी देखि पाबि
कुहैर मन मुरैछ मरैए।

अगम-अथाह रूप समाजक
असथिर भऽ सागर कहबैए।
बर्खा बुन्नी बीच-बीच
ओला-पाथर बरिसा दइए।
पबिते पाबि पृथ्वी पसैर
धरिया-चालि धड़ए लगैए।
उट्ठी-बैसी खेल खेलि
मोइन-धार बनबए लगैए।
टूक सुपारी समाज कटि-कटि
टुकड़ी जाति बनल छै।
टूक-टूक जातिक धरम
धर्म-मानव कात पड़ल छै।
कल्याणक पर्याय धर्म कहबए
कल्याणक दुश्मन बनल छै।
दृष्टिकूट सिरैज दुर्ग-बीच
अलग चित्त चौनाल खसल छै।

देखि-देखि कुहरै छी।
कुहैर-कुहैर सिहरै छी
सिहैर-सिहैर सिसकै छी
सिसैक-सिसैक ठुनकै छी
ठुनैक-ठुनैक कनै छी
अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।

तँए कि कोनो हारि मानै छी
भाग्य-तकदीर सिरजै छी।
ज्योतिषक ज्योति पजाइर-पजाइर
कर्म-लेख लिखैत चलै छी।
जेकर जेहेन भाग्य बनल छै
तेहने तेकरा फल भेटै छै।
फँसि-फँसि शब्दजाल कर्म
गीता गीत सुनबए लगै छै।
पढ़ि गीता बौरा कियो
चिन्तक बनि चिन्तन करैए।
पागल कहि पुक्की दए-दए
बौराहा रूप गढ़ैए।
सभ किरदानी देखि-सुनि
मदनारी शिव कहबैए।
कियो भांगिया-भिखारी मानह
शिवदानी शिव कहबैए। ❑

डायरी

मनक डायरी लिखए बैसलौं
उपहारक डायरी निकाललौं।
रंग-रूप देखि डायरीक
ऊपरे-ऊपरे भसए लगलौं।
भसैत-भसैत-भसैत
मनक बात बिसरए लगलौं।
छपल फूल गुलाब कली
बिहिया-बिहिया देखए लगलौं।
सुर-सुर करैत सुरसुरी आबि
नाकर छोर खिचए लगलौं।
रस-गन्धक भूख जगा
भूखल मन तरसए लगल।
ताकए लगलौं रस कलीमे
सादा कागत बनल-पड़ल।
सीख-लीख नै परेख पेलौं
अखनो ओहिना बैसल पड़ल।

गुन-गुन गुनगुनाए लगलौं
जगल अपन डायरी मनमे
हाँइ-हाँइ पन्ना उनटेलौं
कलम खोलि विचारल मनमे।

तही बीच आँखि पड़ल पन्ना
चार्ट बना टांगल देखल
अपन मनक चार्ट नै देखि
अदहन मन उधिआए लगल ।

आखर अन्तिम मोन पड़िते
कलमक हाथ घुसकए लगल ।
अनका असे केते दिन बितल
मनक हिसाब उठए लगल ।
मनक हिसाब उठए लगल । ❑

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम

पंगु- (उपन्यास) लेखन तिथि: 11 मई 2018 सँ 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक : शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू : शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन : शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि : शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच : शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह : शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात : शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

---

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

90/मण्डलजीक 'पंगु' उपन्यासक बादक गद्य लेखन-क्रम:

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक : शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

---

898. सुचिता- दू : शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन : शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि : शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच : शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह : शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात : शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल : शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक : शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक : शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू : शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन : शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि : शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच : शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात : शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ : शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ : शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस : शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह : शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक : शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू : शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन : शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि : शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच : शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह : शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात : शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ : शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

---

949. संकल्प- नअ : शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस : शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक : शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू : शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन : शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि : शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच : शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल : शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक : शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू : शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन : शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि : शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच : शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह : शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ : शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ : शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस : शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कऽ खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति. : 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियैँ-मनियैँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकैँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी : शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा : शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी : 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी : 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी : 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी : 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी : 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी : 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी : 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी : 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी : 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी : 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि : 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि : 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि : 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुट्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- जारी...

❑❑❑

❑❑

❑

Notes

